



# INDIA'S EXTRAORDINARY GAZETTE

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—हाफ 3—उप-क्षण्ड (I)  
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

नं. 500] नई दिल्ली, भृंगवार, फिल्डर 19, 1989/भाद्र 28, 1911  
No. 500] NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 19, 1989/BHADRA 28, 1911

इस भाग में विभिन्न पृष्ठ संख्या वाली जाती है जिससे कि यह अलग संकाय के लिये लगातार आ जाए

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

### रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

अधिनियम

नई दिल्ली, 19 फिल्डर, 1989

सा. का.नि. 844 (भ)---ऐन्ड्रिय चरकार, रेल दावा अधिकारण  
अधिनियम, 1987 (1987 का 54) की धारा 30 की उपधारा (2) के  
खंड (ख) द्वारा दित अधिनियम का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम  
बनाती है, यथात्—

#### 1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ—

(1) इन विवाइ का संक्षिप्त नाम रेल दावा अधिकारण (प्रधान,  
उप्राधान और सदस्यों का विवाइ और भता दावा सेवा का विवाइ) नियम,  
1989 है।

(2) ये अधिनियम की धारा 2 के खंड (ख) के अर्थ के अन्तर्गत  
"नियम" भी लागू होते हैं।

#### 2. विवाइयाएँ—

इन नियमों में नव तक कि विवाइ के अन्यथा अधिनियम हो,

648 GI/89

(क) "अधिनियम" से रेल दावा अधिकारण अधिनियम, 1987  
(1987 का 54) अभिन्न है,

(ख) "अधिकारण" से अधिनियम की धारा 3 के अन्तर्गत लगातार आ जाना अधिकारण अभिन्न है,

#### 3. "विवाइ"—

स्थान एवं विवाइ विवाइ विवाइ के विवाइ विवाइ ; उनाहाल  
विवाइ विवाइ 2300-100-7600 लाइ के विवाइ विवाइ में विवाइ विवाइ  
विवाइ विवाइ, इस विवाइ के अन्तर्गत इन्हें हुए पात्र हों यादि 30 अंक  
विवाइ विवाइ का पात्र होता है कि विवाइ विवाइ विवाइ विवाइ  
विवाइ विवाइ के अन्तर्गत यह पात्र होता है, साथ्य प्रतिवाक्य 2300-100-  
7600 लाइ के विवाइ विवाइ में विवाइ विवाइ करेगा,

वरन्तु ऐसे किसी अधिनियम की अवधारणा उपायव्यवस्था का सदस्य के लिये में  
दियुक्ति वाली दावा से जो किसी उच्च न्यायालय के व्याधार्थीक के दस्ते में  
निर्दित हुआ है, या उच्च न्यायालय के किसी उच्च न्यायालय के अधीनी  
दावा से विवाइ हुआ है और जो प्रेशर, उपरान, अधिवायी अधिकार के  
विवाइ के अन्तर्गत यह प्रधान प्रधान का विवाइ विवाइ विवाइ के  
प्रधान की विवाइ विवाइ विवाइ विवाइ है या विवाइ की विवाइ

जिन्हें अप्स करने वाले हृषीदार हो जाय है, वे तत्त्व के से पैदान की भूल रखने वाले अनिवार्य अविष्य निवृति में नियोजित अविदान के व्यापार व्यापार या विर्तु इन्वेस्टमेंट अन्य अविदार की देखा निवृति असुविधाएं, यदि कोई हो, जो उसके द्वारा प्राप्त की जाए है, जो की उत्तरी बम कर की जाएंगी।

4. भद्रभाई भट्टा और नगर प्रतिकरत्तव्यक भट्टा—प्रध्यादा, उप्राध्यादा और लखर अपने वैदेन के भग्नाकूल महाराई भट्टा और नगर प्रतिकरत्तव्यक भट्टा उन्हीं हर्दीं पर प्राप्त करेगा जो समतुल्य वैदेन था तो आले कैलंप संस्कार के अर्हां उसीं वैदेनमान में किसी सदूर “क” प्रतिकारों को आनंदीय है ।

5. अद्यता के रूप में निम्न वित्त पर यूल सेवा की नियूति:-

(1) शास्त्रात्मक या सावधान्य यो अधिकारण में अपनी नियुक्ति की सारीत थी, केन्द्रीय सरकार या वित्ती राज्य संस्थान के अधीन सेवा में था, अधिकारण में अपनी नियुक्ति के पूर्व ऐसी सेवा से निवृत्ति की थी और उच्च व्यापारियों के वित्ती ऐसे आर्थिक व्यापारियों की इच्छा से विसंग अध्यात्म के रूप में नियुक्त बित्त जाता है, अधिकारण में उसकी सेवा को भारत के संविधान की दूसरी अनुसूची के बाग थ के दैरा 11 के अन्तर्गत (ख) के उपखण्ड (i) के अधिनियम वास्तविक सेवा माला जाएगा।

(2) नियम 3 के उपर्यादों के अधीन इतनी हुई अवधि, उपायका, या सप्तत्य ऐसी नियुक्ति के पूर्व उसको लागू होने वाले नियमों के अन्तर्गत और उपर्याद ग्राहन करने का हक्कदार होगा :

परन्तु वह धर्मी उपाधित छुट्टी धारणीत करने के लिए अनुशासा नहीं लिया जाएगा किन्तु धर्मी निवृत्ति के द्वारा उसकी जागू नियर्थी के अनुशासा छुट्टी देता है, वही कोई देय है, यद्यपि नदेश राजा आप्त करने का उपयोग होता ।

६. वृक्ष-

(j) सेवा या उत्तरके विर्यों भाग के प्रत्येक पुरे- -क्षम के लिए भव्यहृषि एवं एवं उपर्युक्त छट्टी ।

(iii) सेवा के प्रत्येक धूरे वर्ष की वार्षिक रीक्षण की दर से विकित्ता व्यापारणपत्र पर या नियंत्रण वर्ष पर आधा वेतन छूटने के लिए छूटदृश्य वेतन उपायित छूटदृश्य के दोगुना अनुबोध छूटदृश्य वेतन के आधा के बराबर होगा।

(iii) आधा यैतन पर कूट्टी व्याधिस, उपाय्यका या क्षदर्य के स्वविवेकालु द्वारा पूर्ण यैतन कूट्टी में शर्यायित की जा सकती, परन्तु यह सब अवधि यह विवित्ता आधारों पर सौ जाती है। और कक्षम विवित्ता आधिकारी के विवित्ता प्रशासन द्वारा समर्पित है।

(iv) एक प्रकाशिति में एक लोग लार्ज़ दिन वह अधिकातम अवधि तक दैनन्दिन और ४ से के दिनों असाधारण छुट्टें।

(2) दूर आवश्यक स्थापना का कार्य कदम शिवराज के द्वारा जो हालांकि इन्हें दूरी की दृष्टि से विशेष वा उपरोक्त इनमें सम्बन्ध है तो वह व्याख्याता की अवसर्यता अधिक प्रेरणा छोटे के नेतृत्व में लोकों का इन्हाँर होता।

(3) अधिकारण में अपनी पदावधि की समर्पित पर व्यवस्था उपाय्या  
एवं सदस्यप्रपत्ति अपने नाम में जास उपायित छुट्टी वैतन है वर्गावर नवाच एवं  
भ्राता वृत्तें का हवदार होता :

परन्तु इस उपायपरम और नियम 5 के उपनियम (2) के परन्तुके अवधित उग्र छुट्टी की वादा विवाद लिए बदले में वक्तव्य रखम प्राप्त की गई है 240 दिन से अधिक बढ़ी होगी ।

(1) ऐसी छुट्टी बेतन की बातचार लकड़ी देकम के बास्तव लालिंगण  
में पहुँचाय की तारीख को प्रवृत्त बरों पर छुट्टी बेतन पर महाराष्ट्र भस्त्र  
भी है निम्न प्रकार बातचार लकड़ी देकम (दगड़) रसा था कोई धन्य इस  
बहां है।

7. छुट्टी बंजूर करने वाला प्राधिकारी:- अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और किसी सदस्य को छुट्टी बंजूर करने वाला सदाग्र प्राधिकारी होगा और अग्रिम का राष्ट्रपति प्राध्यक्ष को छुट्टी बंजूर करने वाला सदाग्र प्राधिकारी होगा । अध्यक्ष किसी सदस्य को छुट्टी देने की शक्ति उपाध्यक्ष को अत्यधिकारित कर सकता ।

४. पैशान:— ( 1 ) लक्ष्यले, उपाध्यक्ष या सदस्य द्वारा क्षण में भाषिकरण में नियमित प्रत्येक व्यक्तिपैशान या लक्ष्यवार लोगों :

परस्त ऐसी कोई विवाद ऐसे किसी अविवाहित को देय नहीं होगी।—

(i) यदि उसने दो वर्ष की सेवा की थी तो उसे वर्ष सेवा की है।

(ii) यदि उसे भवित्वात्मक की आरा 8 की उपलाप (2) पर भवित्व अधिकारण के लिये एक लंबे हटा दिया गया है।

(3) उपनियम (1) के अंदरीन वैश्वान प्रत्येक सेवा के द्वारा यह या उसके लाभ के लिए साथ यही रूपा प्रतिमास की दर से संशोधित की जाएगी और अधिकारण में रोका के बहाँ की संख्या पर ध्यान दिया जिन वैश्वान की अधिकतम एकम तीन हजार ताज तीन रूपए प्रतिमास से अधिक नहीं होगी।

परन्तु इस नियम के अधीन संदेश पेश की तुल रकम ऐसी जिती जैसी की रकम सहित जिसके अन्तर्गत ऐसी जैसी रेशम (सूचि कोई हो) का संरक्षित भाग भी है जो अधिकरण में पद छाँट करते समय प्राप्त विद्या पदा है या जिसे प्राप्त करने का हूँ है, तार हजार रुपए, प्रतिमास और अधिक नहीं होगा ।

९. भवित्य निषिद्धः—धार्यक्ष, उपाध्यक्ष या सदस्य अपने विवरण के अनुसार शाश्वारण विषय निषिद्धि में छापा दाय करने का हवाहार होना चाहीर, ऐसे प्रकार उसके विवरण की दस्ता में, शाश्वारण विषय निषिद्ध निर्दिशों के उपर्युक्तों से जारीना चाहीर :

परम्परा यदि अध्ययन, उपाध्यक्ष वा सद्वन्द्व-इतिहास में अपना पद शहर करने के दौरान पूर्व कियों तो इच्छा अवधारणा का स्वार्थार्थ या कार्यालय विधिक सेवा का अध्ययन या विद्यालय सेवा का सद्वन्द्व था, तो वह ऐसे नियमों द्वारा विस्तृत होता रहेगा जो विधिवास्त्र में उत्तम पद शहर करने के पूर्ण उत्तरोत्तम हों।

### 1.0 दौड़ी/स्वास्थ्यसंवर्धन एवं विकास

(1) अतिरिक्त जा रेता अध्ययन जो अध्यक्ष बनने के पूर्व उपायदर्शक था, उपायदर्शक या सदस्य आपने निराकार रथान पर प्रवाहन करने के लिए, और पर रहने के द्वारा या रथानांतरण पर (जिसमें घनत्वंत अधिकारण में वदनाहारण करने के लिए कोई वाका नहीं है), जाका सत्ता या दैनिक भूमि, अविद्यार्थी मान अस्तवाद और ऐसी ही समान बस्तुओं के परिवहन का उच्ची आपानान और उच्ची दरों पर प्रवर्द्धन होगा, जो उच्चीय स्तरावर



Provided that in the case of appointment as Chairman, Vice-Chairman or Member of a person who has retired as a Judge of a High Court, or who has retired from service under the Central Government or a State Government and who is in receipt of, or has received or has become entitled to, receive any retirement benefits, by way of pension, gratuity, employer's contribution to a Contributory Provident Fund or other forms of retirement benefits, the pay shall be reduced by the gross amount of pension or pensionary equivalent of employer's contribution to the Contribution Provident Fund or any other form of retirement benefits, if any, drawn, or to be drawn by him.

#### 1. Dearness Allowance and City Compensatory Allowance.

The Chairman, a Vice-Chairman and a Member shall receive dearness allowance and city compensatory allowance appropriate to their pay at the same rates as are admissible to a Group 'A' Officer in the same scale of pay under the Central Government drawing an equivalent pay.

#### 2. Retirement from parent service on appointment as Member :—

(1) The Chairman, a Vice-Chairman or a Member who, on the date of his appointment to the Tribunal, was in the service under the Central Government or a State Government shall seek retirement from such service before his appointment to the Tribunal and in the case of a sitting Judge of a High Court who is appointed as Chairman, his service in the Tribunal shall be treated as actual service within the meaning of sub-clause (i) of clause (b) of paragraph 11 of Part D of the Second Schedule to the Constitution of India.

(2) Subject to the provisions of rule 3, the Chairman, a Vice-Chairman or Member shall be entitled to receive pension and gratuity in accordance with the retirement rules applicable to him prior to such retirement :

Provided that he shall not be allowed to carry forward his earned leave but shall be entitled to receive cash equivalent to leave salary, if any due, in accordance with the rules applicable to him prior to his retirement.

#### 3. Leave :—

(1) A person, on appointment in the Tribunal as Chairman, Vice-Chairman or Member shall be entitled to leave as follows :

- (i) earned leave at the rate of fifteen days for every completed year of service or a part thereof;
- (ii) half pay leave on medical certificate or on private affairs, at the rate of twenty days in respect of each completed year of service and the leave salary for half pay leave shall be equivalent to half of the leave salary admissible during the earned leave;
- (iii) leave on half pay can be commuted to full pay leave at the discretion of the Chairman, Vice-Chairman or Member, provided

it is taken on medical grounds and is supported by a medical certificate from the competent medical authority;

- (iv) extra-ordinary leave without pay and allowances upto a maximum period of one hundred and eighty days in one term of office.

(2) If the Chairman, Vice-Chairman or a Member is unable to enjoy full vacation on account of his occupation with the Tribunal, he shall be entitled to add the unenjoyed period of vacation to his leave account.

**Explanation**—For the purpose of this sub-rule, 'vacation' means vacation of thirty days in each calendar year observed by the Tribunal.

(3) On the expiry of his term of office in the Tribunal, the Chairman, Vice-Chairman or Member shall be entitled to receive cash equivalent of leave salary in respect of the earned leave standing to his credit :

Provided that the quantum of leave encashed under this sub-rule and proviso to sub-rule (2) of rule 5 shall not exceed 240 days.

(4) The cash equivalent of such leave salary shall include dearness allowance on leave salary at the rates in force on the date of relinquishment of office in the Tribunal but shall not include Compensatory (City) Allowance, or any other allowances.

#### 7. Leave sanctioning authority :—

The Chairman shall be the authority competent to sanction leave to the Vice-Chairman and a Member and the President of India shall be the authority competent to sanction leave to the Chairman. The Chairman may delegate to a Vice-Chairman the powers to grant leave to a Member.

#### 8. Pension :—

(1) Every person appointed to the Tribunal as Chairman, Vice-Chairman or Member shall be entitled to pension :

Provided that no such pension shall be payable to such a person —

- (i) if he has put in less than two years of service; or
- (ii) if he has been removed from an office in the Tribunal under sub-section (2) of section 8 of the Act.

(2) Pension under sub-rule (1) shall be calculated at the rate of rupees seven hundred per annum for each completed year of service or a part thereof and irrespective of the number of years of service in the Tribunal, the maximum amount of pension shall not exceed rupees three thousand five hundred per annum.

Provided that the aggregate amount of pension payable under this rule, together with the amount of any pension including commuted portion of pension (if any), drawn or entitled to be drawn while holding office in the Tribunal, shall not exceed four thousand rupees per mensem.

## 9. Provident Fund :—

The Chairman, Vice-Chairman or a Member shall be entitled to subscribe to the General Provident Fund at his option and, in the case of his so opting, shall be governed by the provisions of the General Provident Fund Rules :

Provided that if the Chairman, Vice-Chairman or a Member was a Judge of a High Court or a Member of the Indian Legal Service, or a Member of a Central Service immediately before his joining the Tribunal, he shall continue to be governed by the rules as were applicable to him before his joining the Tribunal.

## 10. Journeys on tour/transfer :—

(1) A Chairman who was a Vice-Chairman before becoming Chairman, a Vice-Chairman or a Member of the Tribunal, shall while on tour, or on transfer (including the journey undertaken to join the Tribunal) to proceed to his home town, be entitled to travelling allowances, daily allowances, transportation of personal effects and other similar matters at the same scales and at the same rates as are applicable to a Group 'A' Officer of equivalent pay scale in the Central Government.

(2) A Chairman who was a judge of a High Court shall continue to be governed by the provisions of the High Court Judge (Travelling Allowances) Rules, 1956, as regards his entitlements under this rule.

## 11. Leave Travel :—

The Chairman, a Vice-Chairman or a Member shall be entitled to leave travel concession at the same rates and at the same scales and on the same conditions as are applicable to Group 'A' officers of equivalent pay scale in the Central Government.

## 12. Accommodation :—

(1) Every person appointed to the Tribunal as a Chairman, Vice-Chairman or Member shall be entitled to the use of an official residence from the Central Government if available, on the payment of the licence fee at the rates prescribed by the Central Government from time to time.

(2) Residential accommodation for the Chairman, a Vice-Chairman or a Member at such stations where Central Government accommodation is not available, may be hired on lease by the Central Government subject to such ceilings on hire-charges as may be specified by the Central Government from time to time.

(3) When the Chairman, a Vice-Chairman or a Member is not provided with, or does not avail himself of the accommodation referred to in sub-rules (1) and (2), he may be paid, every month, house rent allowance as may be admissible from time to time to an officer of equivalent pay scale in the Central Government.

(4) When the Chairman, a Vice-Chairman or a Member occupies an official residence beyond the permissible period, he shall be liable to pay such

2648 GI/89-2

additional licence fee or other charges as are leviable under corresponding rules of the Central Government governing allotment of Central Government accommodation in addition to being liable to eviction in accordance with the rules applicable to the officers drawing equivalent pay in the Central Government.

## 13. Facility of conveyance :—

The Chairman, Vice-Chairman and Member shall be entitled to the facility of staff car for journeys for official and private purposes in accordance with the rules governing use of staff car facilities applicable to officers of the Central Government drawing equivalent pay in that Government.

## 14. Facilities for Medical treatment :—

(1) The Chairman, Vice-Chairman or Member shall be entitled to medical treatment and hospital facilities as provided in the Central Government Health Scheme and in places where the Central Government Health Scheme is not in operation, as provided in the Central Services (Medical Attendance) Rules, 1944.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) the Chairman, Vice-Chairman or Member shall be entitled, at his option to avail of the health service facilities applicable to the officers of equivalent pay scales under the Railway Administration or, where there are no equivalent pay scales, to facilities applicable to officers drawing the highest pay scale under the Railway Administration.

## 15. Conditions of Service etc., of the Chairman.

Notwithstanding anything contained in rules 4 to 11 of these Rules, the conditions of service and other perquisites available to the Chairman shall be the same as admissible to a serving Judge of a High Court."

## 16. Residual provision :—

Any condition of service of the Chairman, Vice-Chairman or Member for which no express provision has been made in these rules shall be determined by the rules and orders for the time being applicable to a Secretary to the Government of India in the case of the Chairman and Vice-Chairman, and by the rules and orders applicable to Additional Secretary to the Government of India in the case of Members.

## 17. Powers to relax rules :—

The Central Government shall have power, for reasons to be recorded in writing, to relax the provisions of any of these rules in respect of any class of categories of persons.

[No. 89/TC (RCT) | I-6]

RANJIT MATHUR, Officer on Special Duty  
Railway Board.